प्रस्तुतकर्ता – डॉ० सत्येन्द्र प्रसाद सिंह
हिन्दी विभाग,
रामदयालु सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

स्नातक प्रतिष्ठा तृतीय खण्ड, पत्र – सप्तम

'भाषा विज्ञान' का स्वरूप-विवेचन करते हुए उसके सामान्य लक्षणों को रेखांकित कीजिए।

'भाषा' मनुष्य के विचार-विनिमय का साधन है। इसका विकास संस्कृत के 'भाष' धातु से हुआ है जिसका अर्थ होता है– 'बोलना' या 'कहना'। इसमें पशु-पक्षियों की बोली से लेकर मनुष्य तक की भाषा आती है। किन्तु मनुष्य जिस भाषा का प्रयोग अपने बोलने अथवा 'विचार-विनिमय के लिए करता है वह अन्य प्राणियों की भाषा से भिन्न है। विचार-विनिमय और भावाभिव्यक्ति के (वैन्द्रिए) सभी साधन भाषा के क्षेत्र में आते हैं। वेन्द्रिए महोदय के अनुसार– "भाषा एक प्रकार का चिन्ह है। चिन्ह का आशय उन प्रतीकों से है जिनके द्वारा सहायता से मानव अपना विचार दूसरों पर प्रदर्शित करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं, जैसे – नेत्रग्राह्य, श्रोत-ग्राह्य या स्पर्श-ग्राह्य। वास्तव में श्रोत-ग्राह्य प्रतीक भाषा की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं।

"A Language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which members of a social group cooperate and interact." (स्त्रुत्वाँ)

"भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।"

स्वीट के अनुसार "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।"

प्लेटो के अनुसार– "ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"

"भाषा वक्ता के विचार को श्रोता तक पहुँचाती है, अर्थात् वह विचार-विनिमय का साधन है।"

भाषा विज्ञान के अन्तर्गत भाषा का वैज्ञानिक अथवा विधिवत अध्ययन किया जाता है। डॉ० श्यामसुन्दर दास के शब्दों में – "भाषा-विज्ञान भाषा की उत्पत्ति उसकी बनावट, उसके विकास

तथा उसके ह्रास की वैज्ञानिक व्याख्या है।" भाषाविज्ञान में उन्होंने लिखा है - "भाषा विज्ञान उस शास्त्र को कहते हैं, जिसमें भाषा मात्र के भिन्न-भिन्न अंगों और रूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाता है। ... सारांश यह है कि भाषा विज्ञान की सहायता से हम किसी भाषा का वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन, अध्ययन और अनुशीलन करना सीखते हैं।"

डॉ० भोलानाथ तिवारी के शब्दों में "जिस विज्ञान के अन्तर्गत ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन के सहारे भाषा की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदि की सम्यक व्याख्या करते हुए इन सभी विषयों में सिद्धान्तों का निर्धारण हो, उसे भाषा-विज्ञान कहते हैं।"

डॉ० उदय नारायण तिवारी अपनी भाषा-शास्त्र की रूपरेखा में लिखते हैं कि "भाषा विज्ञान उस शास्त्र को कहते हैं जिसमें हम भाषा मात्र के भिन्न-भिन्न अंगों का विवेचन, अध्ययन और अनुशीलन करना सीखते हैं।" लेकिन यह परिभाषा डॉ० श्यामसुन्दर दास की परिभाषा के निकटवर्ती है और पूर्णरूप से स्पष्ट भी नहीं है।

डॉ० बाबूराम सक्सेना के शब्दों में "भाषा तत्वों का अध्ययन भाषा विज्ञान का अध्ययन है। किन्तु भाषा विज्ञान के अन्तर्गत हम इससे भी आगे भाषा के विकास आदि पर अध्ययन कर चुके है। अतः इस परिभाषा में हम अव्याप्ति दोष कह सकते हैं।"

डॉ० मंगलदेव शास्त्री के शब्दों में - "भाषा विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं, जिसमें - (i) सामान्य रूप से मानवीय भाषा का (ii) किसी विशेष भाषा की रचना और इतिहास का और अन्ततः (iii) भाषाओं प्रादेशिक भाषाओं या बोलियों के वर्गों की पारस्परिक समानताओं और विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।"

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार "भाषा विज्ञान का सीधा अर्थ है भाषा का विज्ञान और विज्ञान का अर्थ है विशिष्ट ज्ञान। इस प्रकार भाषा का विशिष्ट ज्ञान भाषा विज्ञान कहलायेगा"

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका में भाषा विज्ञान की परिभाषा

इस प्रकार से दी गयी है — "Language may be defined as an arbitrary system of vocal symbols by means of which, human beings, as members of a social group and participants in culture interact and communicate." अर्थात् भाषाविज्ञान का अर्थ भाषा का विज्ञान है जिसके अन्तर्गत भाषा की संरचना एवं विकास का अध्ययन किया जाता है।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं में 'विशिष्ट' और 'सामान्य' या भाषा मात्र जैसे शब्द व्याख्यायेय हैं जो परिभाषा में अवांछनीय समझे जाते हैं; साथ ही भाषा विज्ञान की पद्धतियों का निर्देश परिभाषा में कहाँ तक वांछनीय है, यह भी विचारकों के लिए विचारणीय विषय है। अतः इन्हें भी भाषा विज्ञान की उपयुक्त परिभाषा नहीं ही कहा जा सकता है।

किसी भी विषय की परिभाषा देना बड़ा कठिन काम है। परिभाषा अव्याप्ति अथवा अतिव्याप्ति दोषों से रहित होनी चाहिए। किन्तु एक बात स्पष्ट है कि "भाषा विज्ञान भाषा मात्र का व्यवस्थित अध्ययन है।" अतः हम कह सकते हैं कि भाषा के विकास, उसमें घटित विभिन्न परिवर्तनों आदि का वैज्ञानिक अध्ययन भाषा विज्ञान के अन्तर्गत होता है।

भारत में भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन बड़ा पुराना है। किन्तु आज हम उसके जिस रूप को देखते हैं उसका बहुत कुछ श्रेय यूरोप में भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को है। यूरोप में इसका सबसे पुराना नाम Philology अथवा भाषा प्रेम या शब्द प्रेम प्राप्त होता है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसमें तुलनात्मक अध्ययन विधि का बोलबाला हुआ और इसलिए इसे comparative Philology (तुलनात्मक भाषा विज्ञान) का नाम दिया गया। बाद में comparative शब्द को हटा दिया गया। उस समय तक लोग भाषाविज्ञान और व्याकरण में अन्तर नहीं समझ रहे थे अतः इसका नाम comparative grammar भी रखा गया। बाद में फ्रांस के विद्वानों ने इसे लिंग्विस्टिक Linguistie नाम दिया

जिसे सभी ने स्वीकार किया।

आज भाषा विज्ञान का लिंग्विस्टिक अथवा फाइलोलोजी नाम ही अधिक प्रचलित है। हिन्दी में इस विषय के लिए अनेक नामों का प्रयोग होता है, जैसे- 'भाषा- तत्त्व', 'भाषा- शास्त्र', 'भाषा विचार', तुलनात्मक भाषा शास्त्र आदि। आजकल भाषाविज्ञान ही अधिक प्रचलित है।

प्रश्न उठता है कि भाषा विज्ञान वास्तव में विज्ञान है अथवा कला है या दोनों है। पता चलता है कि वह विज्ञान और कला दोनों है। वह भाषा का क्रमबद्ध अथवा विशिष्ट अध्ययन है। उसके नियम भी सर्वथा एक जैसे होते हैं। भले ही वह गौण हो। वह हमारी ज्ञान पिपासा को शान्त करता है और साथ ही विज्ञान रूप में प्राप्त ज्ञान के सहारे भाषा के सही प्रयोग आदि में सहायता भी पहुँचाता है। इस दृष्टि से उसमें कला के तत्त्व- उपयोगिता और मनोरंजकता भी विद्यमान है। इसलिए भाषा ~~और मनोरंजकता भी विद्यमान है। इसलिए भाषा और मनोरंजकता भी विद्यमान है~~। विज्ञान होते हुए भी कला के गुणों से युक्त है।

SPS[signature]